'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 12 | 04 सितम्बर, 2019 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पांच राज्यों में तीस प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के इस सत्र के प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला अनवरत चल रही है। 9 से 26 अगस्त के बीच इस श्रृंखला में 30 शिविर और जुड़े। ये शिविर पांच राज्यों- कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) में सम्पन्न हुए।

शिविर श्रृंखला का पहला दौर 9 से 18 अगस्त तक चला जिसमें सोलह शिविर आयोजित हुए। सुदूर दक्षिण में कर्नाटक राज्य में इस दौरान दो शिविर आयोजित हुए जिनमें एक बालिका शिविर सम्मिलित है। मैंगलोर के फाल्गुनी रिवर रिसोर्ट, पिलिकुल्ला में 9 से 12 अगस्त तक आयोजित चार दिवसीय बालिका प्रशिक्षण शिविर का संचालन लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने किया। मैंगलोर में रहने वाली बालिकाओं के अतिरिक्त उडपी, गोआ, सूरत, राजस्थान से भी बालिकाएं शिविर में सम्मिलित हुईं। 11अगस्त को शिविर के दौरान पारिवारिक स्नेहमिलन भी रखा गया जिसमें स्थानीय क्षत्रिय परिवार सम्मिलित हुए तथा संघ की कार्यप्रणाली को निकट से जाना। शिविर के दौरान क्षत्रिय पीठ उडपी के सन्त श्री विश्वाधिराज तीर्थ का प्रवचन भी हुआ। राघवेन्द्र सिंह खारड़ा, रतनसिंह असाडा, भंवरसिंह चिरड़िया, तनवीरसिंह पांचोटा, मिठूसिंह बालवाड़ा ने व्यवस्था में सहयोग किया।

कर्नाटक में ही बालकों का प्रशिक्षण शिविर 10 से 12 अगस्त तक बीजापुर में पवनसिंह बिखरणिया के संचालन में आयोजित हुआ। शिविर में बैंगलोर, पुणे व बीजापुर में रहने वाले लगभग 80 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालक ने कहा कि संघ हमें हमारे कर्त्तव्य की, हमारे स्वधर्म की याद दिलाने का कार्य कर रहा है जिसमें हमारे सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है।

महाराष्ट्र राज्य में मुम्बई शहर के भायंदर क्षेत्र में बालकों के चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आई माता मन्दिर के प्रांगण में 15 से 18 अगस्त की अवधि में हुआ। शिविर का संचालन संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने किया। जिसमें मुम्बई शहर में रहने वाले 100 से अधिक स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। आऊ ने शिविरार्थियों से कहा कि युग की मांग को पूरा करने के लिए ईश्वर द्वारा हमें चुना गया है इसीलिए हम संघ के शिविर में आ पाए हैं। अतः अपने महत्त्व को समझें और ईश्वर द्वारा दिए गए दायित्व को पूरा करने में जुट जावें।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

75 स्थानों पर सौंपा ज्ञापन

राजस्थान के मुख्यमंत्री महोदया द्वारा 29 जुलाई को राजस्थान विधानसभा में आर्थिक आधार पर आरक्षण की विसंगतियों को दूर करने के लिए मंत्री समूह के गठन की घोषणा की थी। इस बीच अनेक नौकरियों की विज्ञप्तियां भी जारी होने लगी हैं। मुख्यमंत्री जी को इस संबंध में अपनी घोषणा की क्रियान्विति हेतु 19 अगस्त को श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन द्वारा पलसाना, खंडेला, दांतारामगढ़, लक्ष्मणगढ़, नोखा, श्री डूंगरगढ़, बीकानेर, शेरगढ़, ओसियां, बापिणी, बावड़ी, बालेसर, जोधपुर, पीपाड़, जयपुर, फागी, चाकसू, बाड़मेर, शिव, चौहटन, रामसर, बालोतरा, सिणधरी, सिवाणा, गिड़ा, कल्याणपुर, पागोदी, समदड़ी, पचपदरा, जैसलमेर, फतेहगढ़, पोकरण, खींवसर, लाडनूं, परबतसर, डीडवाना, मेड़ता, मकराना, कुचामन, जायल, सिरोही, शिवगंज, पिण्डवाड़ा, रेवदर, जालोर, आहोर, सायला, रानीवाड़ा, जसवंतपुरा, सांचौर और झुंझुंनूं में ज्ञापन दिया गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

दुर्गादास जी की स्मृति में सप्ताहभर जयंती कार्यक्रमों का आयोजन

13 अगस्त को वीर शिरोमणि दुर्गादास राठौड़ की 381वीं जयन्ती थी जिसके उपलक्ष में समाज ने पूरे सप्ताह उत्साहपूर्वक देशभर में कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा क्षत्रियत्व के आदर्श के प्रति अपनी श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट की। जालोर संभाग के भीनमाल प्रान्त में दुर्गादास जी की जयन्ती के उपलक्ष में 18 अगस्त को भीनमाल स्थित कचहरी रोड विद्यालय प्रांगण में माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में दुर्गादास स्मृति समारोह का आयोजन हुआ। रानीवाड़ा विधायक नारायणसिंह देवल, पूर्व विधायक व कांग्रेस जिलाध्यक्ष समरजीत सिंह. नरेन्द्र आचार्य, शेखर व्यास, मोहन देवासी ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इसी प्रकार बाड़मेर संभाग में चौहटन स्थित श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग में भी माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में 14 अगस्त को जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जोधपुर शहर प्रान्त में दुर्गादास जी की जयन्ती के उपलक्ष में 13 से 20 अगस्त तक जयन्ती सप्ताह मनाया गया जिसके अंतर्गत शहर के विभिन्न राजपूत बाहुल्य क्षेत्रों में अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान बड़ी संख्या में समाजबंधु सम्मिलित हुए तथा दुर्गादासजी को श्रद्धासुमन अर्पित किए। जयन्ती सप्ताह का शुभारंभ 13 अगस्त को हुआ। इस दिन श्री हनवन्त राजपूत छात्रावास, जोधपुर में प्रथम कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'जिसकी कोई चाह नहीं, वह ही शहंशाह'

दुर्गादास ने अपने जीवन में कभी अपने लिए कुछ नहीं चाहा, उनकी स्वयं के लिए प्राप्ति की कोई चाह नहीं थी और जिनकी चाह मिट जाती है वे ही शहंशाह होते हैं, संसार उनकी स्मृति में समारोह आयोजित करता है। हमें हमारे गौरवशाली इतिहास पर गर्व है कि ऐसे शहंशाहों ने हमारा इतिहास बनाया, हमारे इतिहास में ऐसे लोग थे। लेकिन 'थे' से काम नहीं चलता, उसके लिए 'है' चाहिए। इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान बनाना पड़ेगा।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पांच राज्यों में तीस प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

(पृष्ठ एक से लगातार)

गुजरात राज्य में बनासकांठा प्रान्त में दांतीवाड़ा तहसील के पासवाल गांव स्थित गंगेश्वर महादेव मन्दिर के प्रांगण में 10 से 12 अगस्त तक शिविर का आयोजन हुआ जिसमें पासवाल, पांथावाडा, आरखी, सातसण, धनियावाडा, चारड़ा, शिहोरी, मेजरपुरा, वलादर, गुदरी सकलाणा, कारेली, पालड़ी, ऊंबरी, नालोदर, जाड़ी आदि गांवों के 75 स्वयंसेवकों ने अजीतसिंह कुणघेर के संचालन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। कुणघेर ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ सभी सामाजिक समस्याओं का अचूक समाधान है। ईश्वरसिंह आरखी, ईश्वरसिंह पांथावाडा, बलवंतसिंह पासवाल, रामसिंह पासवाल, पुरणसिंह सातसण एवं कानसिंह गांगुदरा ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया। शिविर के दौरान एक स्नेहमिलन भी आयोजित हुआ जिसमें लगभग 500 समाज बंधु उपस्थित रहे। इसी प्रकार मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद ग्राम्य प्रान्त के कानेटी गांव की प्राथमिक शाला में 17 से 18 अगस्त को एक बाल शिविर का आयोजन हुआ जिसका संचालन देवेन्द्र सिंह काणेटी ने किया तथा इस शिविर में लगभग 50 बालकों ने संघ के विचारदर्शन व प्रणाली का प्राथमिक परिचय प्राप्त किया। गुजरात में ही मेहसाणा प्रान्त के पाटन मंडल में 10 से 13 अगस्त तक श्री क्षेमज माताजी मंदिर काठी में शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए इंद्रजीतसिंह जैतलवासना ने कहा कि संघ हमारे सामाजिक जीवन में लुप्त होते जा रहे संस्कारों के पुनर्निर्माण का कार्य कर रहा है। भारी बारिश के बावजूद 165 शिविरार्थियों ने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिल्ली (एनसीआर) प्रान्त का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर फरीदाबाद के वरिष्ठ नागरिक क्लब के प्रांगण में 09 से 12 अगस्त तक सम्पन्न हुआ। रेवतसिंह धीरा के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में राजस्थानी प्रवासी बंधुओ के साथ यूपी व हरियाणा के समाज बंधुओं ने भाग लिया। शिविर संचालक ने कहा कि अपने आपको पहचानने की साधना संघ हमसे करवा रहा है क्योंकि जो स्वयं को जान जाता है वही अपने कर्त्तव्य को भी पहचान पाता है। शिविर की आयोजन व्यवस्था फरीदाबाद के समाज बंधुओं की तरफ से की गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह पांडोराई भी शिविर में उपस्थित रहे।

बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में 10 से 13 अगस्त तक श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन से जुड़े सहयोगियों का एक प्रशिक्षण शिविर माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ जिसका संचालन संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने किया। शिविर में राजस्थान के विभिन्न जिलों से 25 वर्ष से अधिक उम्र के 125 सहयोगियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाड़मेर के खबडाला में भी एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 9 से 12 अगस्त तक आयोजित हुआ जिसका संचालन हरि सिह उडंखा ने किया। शिविर में खबडाला, उगेरी, चेतरोड़ी, कुबड़ीया, गिराब, आकोड़ा, महाबार, कोटड़ा, खुहड़ी, बाड़मेर व चौहटन से लगभग 130 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर संचालक ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंहजी द्वारा बताए मार्ग पर चलने से हमारा व समाज का कल्याण सुनिश्चित हो सकता है। थानसिंह खबड़ाला तथा स्थानीय बंधुओं ने व्यवस्था में सहयोग किया। बाड़मेर में ही गडरा रोड़ क्षेत्र में स्थित मूलसिंह जी की ढाणी, ताणु में भी एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 9 से 12 अगस्त तक हुआ। शिविर का संचालन छगन सिंह लूणू ने किया जिन्होंने शिविरार्थियों को अनुशासन व संयम का महत्त्व समझाया। शिविर में मुंगेरिया, हरसाणी, फोगेरा, तिबनियार, जानसिंह की बेरी, ताणुमान जी, ताणुराव जी, दूधोड़ा, देदड़ियार तथा मल्लीनाथ छात्रावास बाड़मेर की शाखाओं के लगभग 165 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। विदाई कार्यक्रम के दौरान माननीय संघप्रमुख श्री का सान्निध्य भी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ।

जैसलमेर संभाग में फतेहगढ़ क्षेत्र के चेलक गांव में 10 से 13 अगस्त तक शिविर आयोजित हुआ जिसमें बेरसियाला, रामगढ़, पारेवर, सेरावा, मोढा, झिंझनियाली, तेजमालता, चेलक, रणधा, म्याजलार, धोबा, शिवकर, लखा, जोगीदास गांव, हापा, भाडली, नगराजा, छतागढ़, अड़बाला, आला, शोभ आदि गांवो के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन भोजराजसिंह तेजमालता ने किया जिन्होंने युवाओं को संगठन की आवश्यकता व महत्त्व से अवगत कराया। मानसिंह चेलक ने स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। जालोर संभाग में भीनमाल प्रान्त के जेरण गांव स्थित दुदेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में भी एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। 10 से 13 अगस्त की अवधि में आयोजित इस शिविर का संचालन संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने किया। शिविर में जेरण, दासपां, कावतरा, जाखड़ी, पुनासा, दुधवा, सुरावा, दहिवा, करड़ा, सामराणी, सेवड़ी आदि गांवों के लगभग 150 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। देलदरी ने कहा कि राजपूत अपने कर्त्तव्य को भूल गया है जिससे सभी जगह अव्यवस्था फैल गयी है। संघ राजपूत को पुनः उसके कर्त्तव्य के पालन में प्रवृत्त करने का कार्य कर रहा है। जनकसिंह, रेवतसिंह, पृथ्वीसिंह आदि ने जेरण के स्थानीय समाजबंधुओं के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। जालोर संभाग के ही सिरोही प्रान्त में रेवदर मंडल के अंतर्गत 10 से 13 अगस्त की अवधि में एक शिविर का आयोजन मलावा खेतलाजी में हुआ जिसका संचालन खुमान सिंह दुदिया ने किया। शिविर में सरण का खेड़ा, मांडाणी, चूली, निम्बोडा, पादर, मकावल, सेरुआ, चेकला, भटाणा, वडवज, हमीरपुरा, नागाणी, उथमण, इदरला आदि गांवों के 76 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।शिविर संचालक ने कहा कि एकता ही शक्ति का वास्तविक स्रोत है। स्थानीय समाजबंधुओं ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। जोधपुर संभाग के ओसियां प्रान्त का शिविर तिंवरी स्थित महिपाल कॉलेज में 10 से 13 अगस्त तक संपन्न हुआ जिसमें 80 से अधिक शिविरार्थी सम्मिलित हुए। सरदार भगत सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय तिंवरी, गीता धाम उच्च माध्यमिक विद्यालय तिंवरी, जेलु, तापू, जोधपुर शहर, बड़ा कोटेचा, सामराऊ आदि स्थानों के युवा शिविर में उपस्थित रहे। शिविर व्यवस्था में स्वरूप सिंह बड़ला एवं समंदर सिंह तिंवरी ने सहयोग दिया। भैरूसिंह बेलवा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से आह्वान किया कि समय की मांग को पहचानकर हमें तमोगुण से संघर्ष में जुट जाना है। शिविर के दौरान वीर शिरोमणि दुर्गादास राठौड़ की जयंती भी मनाई गयी। बीकानेर संभाग के श्री डूंगरगढ़ में 10 से 13 अगस्त तक रघुकुल राजपूत छात्रावास में एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। करणी सिंह भेलू के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में पुंदलसर, झंझेऊ, विजय भवन, पंचवटी छात्रावास, नारायण निकेतन व कीरतासर शाखाओं तथा आसपास के गांवों से लगभग 150 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। भेलू ने शिविरार्थियों को त्याग व बलिदान की महत्ता बताई। शिविर के दौरान 12 अगस्त को दुर्गादासजी की जयंती भी मनाई गई। उदयपुर संभाग के राजसमन्द प्रांत के अंतर्गत पिपरड़ा स्थित फरारा महादेव मंदिर के प्रांगण में भी एक शिविर का आयोजन 09 से 12 अगस्त की अवधि में हुआ जिसका संचालन संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने किया। उन्होनें कहा कि संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है और हमारी जागृति का स्तर बढ़ने पर हम इस सत्य का स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं। इस शिविर में पिपरड़ा, गलियों का गुड़ा, मांडक का गुड़ा, अमेढ, सेदरा, इतितलाई, भीमपुर, बिजैरी व रोलसाहबसर के 70 से अधिक बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर श्रृंखला का अगला दौर 22 से 26 अगस्त तक हुआ जिसमें चौदह प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुए। इस दौरान जालोर संभाग के पाली प्रान्त के सोजत मंडल में एक शिविर पिपलाद गांव स्थित कालका माता मंदिर में आयोजित हुआ। 23 से 26 अगस्त तक सम्पन्न इस शिविर में पिपलाद, केवलाद, बगड़ी नगर, बिजागुडा, देवली हुल्ला, ढुंढा, सारंगवास, गुड़ा चन्द्रा, गुड़ा श्यामा, गुडांगरी, सवराड़, करमावास, रायपुर, रायरा, बिठौड़ा आदि गांवो के 80 युवाओं ने अमरसिंह चांदना के संचालन में प्रशिक्षण लिया। चांदना ने शिविरार्थियों को बताया कि क्षत्रियत्व त्याग और बलिदान का पर्याय है। गिरधारीसिंह पिपलाद, गजेन्द्र सिंह बगड़ीनगर तथा देवेंद्रसिंह पिपलाद ने व्यवस्था में सहयोग किया। जालोर संभाग में ही सांचोर प्रान्त के बावरला गांव में भी एक प्रशिक्षण शिविर सालक माताजी मंदिर के प्रांगण में आयोजित हुआ। 23 से 26 अगस्त तक आयोजित इस शिविर का संचालन खुमानसिंह दुदिया ने किया जिन्होंने शिविरार्थियों को व्यष्टि, समष्टि और परमेष्टि के संबंध को समझाते हुए जीवन के उद्देश्य को स्पष्ट किया। शिविर में बावरला, कीलण, डबाल, सुरावा, आकोली, सिवाड़ा, अचलपुर, चौरा, डावल, चारणीम, केरिया, पांचला आदि गांवों के 110 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा उठाया। इसी अवधि में गुजरात में सूरत प्रांत का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर बलेश्वर गांव स्थित पोटेंजा फार्म हाउस में सम्पन्न हुआ। शिविर में सूरत, मुम्बई व वापी में निवासरत राजस्थान, गुजरात व उत्तरप्रदेश राज्यों के 142 शिविरार्थियों ने अर्जुनसिंह देलदरी के संचालन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। सुमेरसिंह देवड़ागुड़ा, प्रेमसिंह मारोल, भेरूसिंह ताणु, भोमसिंह जानकी, किशनसिंह ढिमड़ी, नरेंद्र सिंह असाड़ा, मालमसिंह साथू, रघुनाथ सिंह सिरमौर, उत्तमसिंह घाणेराव, किरणसिंह सामल, शैतानसिंह कोविया, चेनसिंह गुड़ाजेतसिंह, कल्याणसिंह चितलवाना, मदनसिंह गुरुकृपा ने व्यवस्था में सहयोग किया। जोधपुर संभाग के भोपालगढ़ प्रान्त के खारिया खंगार गांव में भी इसी अवधि में एक शिविर का आयोजन हुआ जिसका संचालन संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने किया। उन्होंने कहा कि संघ ने हमें जो सिखाया है उसका हम अपने दैनिक जीवन में अभ्यास करें तभी संघ हमारे भीतर स्थायित्व ग्रहण करेगा। शिविर में खारिया खंगार, खांगटा, पालड़ी सिद्धा, धनारी, माडपुरिया, साथिन, छापला, सिणला, गोटन, कागल सहित 25 से अधिक गांवों के 80 से अधिक शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। जोधपुर संभाग के ही शेरगढ़ प्रान्त के देचू मंडल में एक शिविर इसी अवधि में आयोजित हुआ जिसका संचालन संभाग प्रमुख चन्द्रवीरसिंह देणोक ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हमें शब्दों से नहीं अपने आचरण से समाज में नई ज्योति जगानी है अतः जो सीखा है उसे अभ्यास द्वारा अपने आचरण में ढालना होगा। शिविर में जेठानियां, बुड़कियां, लवारण, कलाऊ, सेतरावा, गोपालसर, बेलवा, बस्तवा, बालेसर, खिंयासरिया आदि गांवों तथा पंचवटी छात्रावास से लगभग 85 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। उत्तमसिंह, गोपालसिंह, अर्जुनसिंह, जसवंतसिंह आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया।

नागौर संभाग के लाडनूं सुजानगढ़ प्रान्त में भी इसी अवधि में एक चार दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। **साधना संगम संस्थान कुचामन सिटी** के तत्वावधान में श्री हिम्मत राजपूत छात्रावास, डीडवाना में आयोजित इस शिविर में थेबड़ी, सांवराद, रताउ, सेवदडा, दताऊ, चोलूंका, मामड़ोदा, ढींगसरी, सिंघाना, कणवाई, बंडवा, बरांगणा, लोरोली, देणोक, सफेड़ छोटी आदि गांवों के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए शिम्भुसिंह आसरवा ने कहा कि कर्त्तव्यपालन ही मनुष्य की श्रेष्ठता की कसौटी है। साधना संगम संस्थान कुचामन सिटी के उपाध्यक्ष भगवत सिंह सिंघाना भी शिविर में उपस्थित रहे। नागौर संभाग में ही एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर मकराना में आयोजित हुआ। 22 से 25 अगस्त तक उगम सिंह गोकुल के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में मकराना, मिंडकिया, हरनावा, सफेड़, आसरवा, देवला, कुचामनसिटी आदि से राजपूत युवा सम्मिलित हुए। श्री गोकुल ने युवाओं से समाजसेवा में स्वयं को नियोजित करने की बात कही। नन्दसिंह मकराना, गोविंद सिंह मकराना, रामसिंह मकराना, कानसिंह मकराना, सुरेन्द्र सिंह जस्सूपुरा ने व्यवस्था में सहयोग किया। बाड़मेर संभाग के शिव प्रान्त के चोचरा गांव में जीत उच्च प्राथमिक विद्यालय में भी एक शिविर का आयोजन हुआ। 23 से 26 अगस्त तक सम्पन्न इस शिविर में धारवी, डांगरी, ओला, भैंसड़ा, भिंयाड़, आरंग, चोचरा, उण्डू आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन वीरसिंह गंगासरा ने किया जिन्होंने संयम, श्रम, अनुशासन, स्वाध्याय तथा साधना के आधार पर जीवन निर्माण की बात कही। भैरूसिंह चोचरा (पटवारी) तथा पारससिंह चोचरा ने व्यवस्था में सहयोग किया। इसी अवधि में जैसलमेर संभाग के रामदेवरा नाचना प्रान्त का शिविर आसकन्द्रा गांव में आयोजित हुआ जिसका संचालन नरपतसिंह राजगढ़ ने किया। उन्होंने कहा कि संघ हमें हमारी क्षमताओं का समाज, राष्ट्र व मानवता की सेवा में प्रयोग करने का अभ्यास करवाता है। शिविर में आसकन्द्रा, दिधु, अवाय, नाचना, बारू, अजासर, छायण, भैंसड़ा आदि गांवों के 206 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। धर्मपालसिंह व वीरेंद्र सिंह आसकन्द्रा ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। बीकानेर संभाग के कोलायत प्रान्त के भलूरी गांव में भी इसी अवधि में एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसका संचालन खींवसिंह सुल्ताना ने किया। उन्होंने संघ शिक्षण को जीवन में उतारने की बात कही। शिविर में भलूरी, पंवारवाला, गिर्राजसार, शेरुवाला, बिजेरी, आशापुरा आदि गावों के 85 बालकों और युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। दुर्जनसिंह भलूरी ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। बालोतरा संभाग के सिवाना प्रान्त में भी तेलवाड़ा गांव स्थित गोगाजी मंदिर के प्रांगण में एक शिविर सम्पन्न हुआ। 22 से 25 अगस्त तक आयोजित इस शिविर में सिवाना, मवड़ी, गोलिया, सिणेर, धारणा, बालियाणा, थापन, कुण्डल, पादरू, धीरा, जिनपुर, तेलवाड़ा, भागवा, काठाड़ी आदि गांवों के 97 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए भैरुसिंह पादरु ने कहा कि संघ तपस्या व साधना का मार्ग है। व्यवस्था का जिम्मा समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर संभाला।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ प्रमुख श्री का बाड़मेर, बालोतरा, जालोर व जोधपुर प्रवास

1 अगस्त से 21 अगस्त तक के अपने प्रवास कार्यक्रम में नागौर, बीकानेर, जैसलमेर के बाद माननीय संघ प्रमुख श्री 9 अगस्त को बाड़मेर पधारे। 9 की शाम को महाबार स्थित स्वामी अड़गड़ानंद जी के आश्रम पहुंच कर संत सान्निध्य हासिल किया। 10 से 13 तक श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन से संबद्ध सहयोगियों के चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में रहे। 11 अगस्त को आलोक आश्रम में जाट व विश्नोई समाज के बंधुओं को यथार्थ गीता भेंट की। इसी बीच 12 अगस्त को ताणुमानजी में आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के विदाई कार्यक्रम में शामिल हुए। यहां शिव विधायक अमीन खां भी माननीय संघ प्रमुख श्री से भेंट करने पहुंचे। 14 अगस्त को अपराह्न पश्चात चौहटन पधारे। मार्ग में सांवलोर गांव में समाज बंधुओं के कार्यक्रम में शामिल हुए। विरात्रा माता एवं वैर का थान भी पधारे। सायंकाल श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग चौहटन में आयोजित दुर्गादास जयंती समारोह में शामिल हुए। रात्रि भोजन वहीं छात्रावास में क्षेत्र के स्वयंसेवकों के साथ लिया। 15 अगस्त को स्वामी जी के शिष्य अकेला महाराज एवं लालजी महाराज आलोक आश्रम पधारे एवं माननीय संघ प्रमुख के साथ आध्यात्मिक चर्चा की।

15 की शाम को आश्रम में बाड़मेर के स्वयंसेवकों द्वारा आयोजित रक्षा बंधन कार्यक्रम में शामिल हुए। 16 अगस्त को बाड़मेर से बालोतरा पधारे एवं अपराह्न 12 बजे बालोतरा में स्वयंसेवकों के स्नेहमिलन कार्यक्रम में क्षेत्र में संघ कार्य की जानकारी ली। 16 की शाम को सिवाना में स्नेहमिलन आयोजित हुआ जिसमें समाज बंधुओं एवं स्वयंसेवकों से अनौपचारिक चर्चा की। रात्रि विश्राम सिवाना में करने के उपरान्त 17 को भीनमाल पधारे। भीनमाल में जालोर संभाग के स्वयंसेवकों को स्नेहमिलन में शामिल हुए एवं संभाग में संघ कार्य विषयक चर्चा की एवं एक कार्यक्रम में विश्नोई बंधुओं को गीता भेंट की। 18 को प्रातः भीनमाल के निकट भागल भीम स्थित वैदिक अनुसंधान केन्द्र के संस्थापक स्वामी अग्निव्रत नैष्ठिक माननीय संघ प्रमुख श्री से मिलने पहुंचे एवं वैदिक भौतिकी पर किए गए अपने शौध की जानकारी दी। उन्होंने एतरीय ब्राह्मण पर लिखे अपने शोधपूर्ण ग्रंथ भी भेंट किए। 18 की शाम संघ प्रमुख श्री जोधपुर पधारे। जोधपुर में 19 अगस्त को चौपासनी स्थित शिक्षक कॉलोनी एवं 20 को बासनी स्थित जय भवानी नगर में आयोजित दुर्गादास स्मृति समारोह में शामिल हुए। 18 को भीनमाल में संघ प्रमुख श्री ने सानिध्य में गरिमापूर्ण समारोह के रूप में दुर्गादास जी की स्मृति में कार्यक्रम रखा गया। जोधपुर प्रवास के दौरान संघ कार्यालय तनायन में संघ परिवारों की महिलाएं भी संघ प्रमुख श्री से मिली। 21 को रेल द्वारा जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

जाट एवं विश्नोई समाज के बंधुओं को यथार्थ गीता भेंट

श्रद्धेय स्वामी श्री अड़गानंद जी महाराज के विशेष निर्देश की अनुपालना में जाट व विश्नोई समाज के समाज बंधुओं को यथार्थ गीता भेंट करने के अभियान के तहत 11 अगस्त को बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में कार्यक्रम का आयोजन कर दोनों समाजों के सैंकड़ों लोगों को यथार्थ गीता भेंट की गई। इस अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि अधर्म को समाप्त कर धर्म की स्थापना के लिए होने वाले संघर्ष में शक्तिहीन नहीं जीतता इसलिए श्रेष्ठ लोगों को संगठित होना चाहिए। लेकिन आजकल संगठन ही विकृतियों का कारण बन रहे हैं। चाहे जो मजबूरी हो हमारी मांगे पूरी हों का नारा देने वाले संगठन विकृति का कारण बनते हैं क्यों कि दायित्व की बात भूलकर केवल अधिकारों की बात करना पशुत्व है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ एक बनने से पहले नेक बनने की बात करता है। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि उपार्जित शक्ति को अच्छे काम के लिए देना ही त्याग कहलाता है। श्रेष्ठ वस्तु का त्याग किए बिना ज्ञान, शक्ति आदि कुछ भी काम का नहीं है। देवताओं के सात्विक त्याग से ही महिषासुर का मर्दन करने के लिए देवी का प्राकट्य हुआ। उन्होंने कहा कि जो जितना लेता है उसका दायित्व भी उतना ही अधिक होता है। मनुष्य संसार से सर्वाधिक लेता है इसलिए उसका दायित्व भी अधिक है। उन्होंने कहा कि गीता सम्पूर्ण जीवन की शिक्षा है। व्यक्ति का आध्यात्मिक एवं लौकिक उद्धार करने का मार्ग है गीता। यथार्थ गीता अब तक गीता की उपलब्ध टीकाओं में सर्वाधिक यथार्थ है। इसका प्राकट्य स्वामी जी की अतः प्रेरणा से हुआ है। उन्होंने अपनी गीता के बारे में गुरुकृपा से हुई आत्मानुभूति को बंद कमरे में बैठकर बोला और उसे टेपरिकॉर्डर में रिकार्ड कर फिर लिपिबद्ध किया है। संघ प्रमुख श्री ने बताया कि स्वामी जी की लौकिक शिक्षा केवल तीसरी तक की है। फिर भी परमेश्वर के आदेश से उन्होंने संस्कृत में लिखी गीता की सरल, सुबोध एवं यथार्थ गीता हमारे कल्याण के लिए प्रस्तुत की। इस अवसर पर सेवानिवृत विकास अधिकारी डूंगरसिंह बाना, रा.उ.मा.वि. बाड़मेर शहर के प्रधानाचार्य देवकुमार पोटालिया, रा.उ.मा.वि. लापला के प्रधानाचार्य अमरसिंह गोदारा ने भी विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में शिक्षकों, अधिवक्ताओं, विद्यार्थियों को गीता भेंट की गई। 17 अगस्त को भीनमाल प्रवास के दौरान भी सायं 6.30 बजे विश्नोई समाज बंधुओं को गीता भेंट की गई। भीनमाल स्थित 72 जिनालय में आयोजित कार्यक्रम में माननीय संघ प्रमुख श्री ने हुकमाराम पुलिस उप अधीक्षक, शिवनारायण विश्नोई वकील, नरेन्द्र विश्नोई व मगलुराम ए.एस.आई., श्रवण ढाका वकील, गणपत ढाका, जयराम विश्नोई, भंवरी विश्नोई, राजपाल विश्नोई आदि को यर्थाथ गीता भेंट की। इस अवसर पर भी माननीय संघ प्रमुख श्री ने यथार्थ गीता का महत्व बताया एवं गीता के आलोक में जीवन के वास्तविक लक्ष्य की ओर बढ़ने का संकल्प लेने की आवश्यकता जताई।

क्षत्रिय परंपरा का ज्ञान है गीता

गीता ज्ञान को राजर्षियों की परंपरा का ज्ञान बताया गया है। राजर्षि परंपरा का अर्थ क्षत्रियों की परंपरा है इसलिए गीता क्षत्रिय परंपरा का ज्ञान है। क्षत्रिय ही इस ज्ञान को यथारूप समझ सकता है। इसलिए जो कहता है कि गीता हमारा ग्रंथ है, वही क्षत्रिय है। हमने एक गलत धारणा पकड़ ली कि जो शस्त्र पकड़ता है वही क्षत्रिय है। निश्चित रूप से शस्त्र उसका अलंकार है लेकिन शास्त्र के अभाव में यह व्यर्थ है। उपनिषदों का ज्ञान ब्राह्मणों के पास क्षत्रियों से आया, ऐसा छांदोग्य उपनिषद में उल्लेख है। क्षत्रिय ज्ञान का धारक भी है और रक्षक भी। ज्ञान से रक्षा होती है। क्षत्रिय जब तक क्षत्रिय धर्म निभाएंगे तब तक क्षत्रिय है अन्यथा जात पांत फैलेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ क्षात्र वृत्ति को पुनः उद्धीप्त करने में प्रवृत है। ऐसा मैं समझ पा रहा हूं।

क्षत्रिय पीठ उडपी के संत श्री विश्वाधिराज तीर्थ ने मंगलौर बालिका शिविर में बालिकाओं को संबोधित करते हुए उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय की अपनी फंक्शनिलिटी होती है जिसे क्षत्रिय ही निभा सकता है और इसे निभाने पर ही क्षत्रिय बच सकता है। आज समाज में क्षत्रिय की फंक्शनल परजेंस नहीं है इसलिए जागृति आवश्यक है। हम कौन है इसकी ओथेंटिक जानकारी महाभारत एवं रामायण से मिलती है। संघ बाहरी ही नहीं आंतरिक भी होता है। सच्चे क्षत्रिय की उपस्थिति ही समृद्धि का हेतु होती है ऐसा अज्ञातवास से प्रकरण में युधिष्ठर की विराट नगर में उपस्थिति से पुष्ट होता है। सच्चे क्षत्रिय की इच्छा के बिना काल का निर्धारण भी नहीं हो सकता। युधिष्ठर के वंश का शासन रहने तक कलि का प्रभाव पैदा नहीं हो पाया ऐसा महाभारत में विवरण मिलता है। उन्होंने कहा कि जो आर्तनाद को अनसुना करे वह सच्चा क्षत्रिय नहीं है। शासन के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और क्षत्रिय का घर प्रारम्भ से ही इसका प्रशिक्षण स्थल होता था। आज पांच वर्ष के लिए आने वाला शासक समृद्धि नहीं ला सकता क्यों कि उनको ऐसा कोई प्रशिक्षण नहीं मिलता। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि क्षत्राणियां चाहें तो यह पुनः प्रतिष्ठित हो सकता है और आपका यह शिविर ऐसा ही प्रयास है। मां के पास बच्चा जितना समय बिताता है वही उसके लिए पुष्टिकारक होता है। उन्होंने कहा कि उनका व संघ का काम अलग-अलग नहीं है। वे गीता और महाभारत को धारण करवाते है। क्षत्रिय का प्रशिक्षण महाभारत से ही हो सकता है इसलिए गीता और महाभारत का समुचित अभ्यास आवश्यक है।

संपादकीय

भारत किसका हमारा!

संघ के शिविरों में एक खेल खेलते हैं, 'भारत किसका, हमारा!' इस खेल में एक व्यक्ति को किसी रुमाल जैसी वस्तु को मिट्टी में दबाकर उसके ऊपर खड़ा कर दिया जाता है। वह तीन बार उद्घोष करता हैं भारत किसका? शेष सभी जवाब देते हैं हमारा। तीसरी बार के उद्घोष के बाद सभी अपना अपना पैर उस रूमालनुमा वस्तु वाले स्थान पर जमाने के लिए संघर्ष करते हैं। व्हीसल बजने के बाद जिसके पैर के नीचे रूमाल मिलता है वह विजेता माना जाता है। कहने को तो यह एक खेल है। ज्यादा से ज्यादा हम यह कह सकते हैं कि इस खेल में संघर्ष करने के गुण का अभ्यास होता है। प्रकट में बाहर से तो ऐसा ही प्रतीत होता है लेकिन इसका उद्घोष 'भारत किसका, हमारा!' अपने आपमें बड़ा संदेश है। वास्तव में यह भारत किसका है, यही विचारणीय है। चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से जाना जाने वाला यह भारत किसका है? भगवान राम के रामराज्य का स्वाद चख चुका यह भारत किसका है? धर्म की रक्षा के लिए अपने ही कुटुम्ब का रक्त बहाने को तत्पर रहने वाला यह भारत किसका है? भगवान राम द्वारा अयोध्या से श्रीलंका तक एवं भगवान कृष्ण द्वारा द्वारिका से मणिपुर तक एक सूत्र में बांधा गया यह भारत किसका है? साधन की पवित्रता की रक्षा करते हुए भी साध्य की आवश्यकता होने पर उस पवित्रता को भी छोड़ने को तत्पर रहने की वैज्ञानिक सोच देने वाला भारत किसका है? भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, जाम्भोजी, मीरा, रामदेवजी, पाबूजी, हडबूजी आदि महापुरुषों को पैदा कर आमजन के लिए जीवन की सार्थकता के संदेश को सुलभ कराने वाला भारत किसका है? शकों, कुषाणों, हुणों, तुर्कों, मुगलों आदि आततयियों से रक्त की अंतिम बूद तक संघर्ष करने वाला भारत किसका है? कर्तव्य पालन के क्षणों में भावनाओं को रौंदने वाला भारत किसका है? अपने कर्तव्यच्युत पति को अपना शीश भेजकर कर्तव्य पालन करने को प्रेरित करने वाली हाड़ी रानी को जन्म देने वाला भारत किसका है? जौहर और शाकों का साक्षी बनने वाला भारत किसका है? जल, जंगल, जमीन और जानवर के लिए भी बलिदान होने वाले सपूतों को जन्म देने वाला भारत किसका है? निर्जीव मूर्तियों के लिए सजीव मूर्तियों की बलि देने वाला भारत किसका है? ऐसे ही अनेकों प्रश्न हमारे सामने खड़े हो सकते हैं कि इस प्रकार के अनेक अचिन्त्य खेल खेलने वाला भारत किसका है? उत्तर भी खेल के उद्घोष में ही मिलता है, 'हमारा'। यही इस खेल का संदेश है कि यह भारत हमारा है? जिन नर पूंगवों के बल पर भारत ने ये सब अचिन्त्य खेल खेले, यह भारत उनका है, उनकी संतानों का है। लेकिन फिर एक नया प्रश्न खड़ा हो जाता है कि क्या वे संताने यह मान रही है कि यह भारत हमारा है? यह याद दिलाने के लिए ही शायद पूज्य तनसिंह जी ने यह उद्घोष सृजित किया कि 'भारत किसका, हमारा'।

हम यह माने कि वह गांव जिसमें हम रहते हैं हमारे ही किसी पुरखे के बलिदान के कारण आबाद रहा है। वह गोचर जिस पर पहले सरकारी एवं अब निजी कब्जे हो गए हैं, हमारे ही किसी पुरखे द्वारा स्वयं का बलिदान देकर बचाया गया था। वह संस्कृति जो आज विभिन्न प्रकार की अपसंस्कृतियों के हमलों से तार-तार हो रही है, हमारे ही पूर्वजों द्वारा रक्षित, पुष्पित एवं पल्लवित हुई थी, ऐसे में यह हमारी है। इस संस्कृति के मानदंडों के लिए जिन पूर्वजों ने अपने सिर सस्ते बनाए रखे वे हमारे अपने है। पूर्वजों की संपत्ति हमारी अपनी होती हैं। जो अपना होता है वही तो हमारा है और जो हमारा है उसके प्रति हमारा रागात्मक संबंध होना चाहिए। ऐसे में हम कैसे मान सकते हैं कि केवल 20 गुणा 50 का भूखंड ही हमारा है? हम कैसे मान सकते हैं कि 10-15 बीघा की कृषि जोत ही हमारी है? हमने कैसे स्वीकार कर लिया कि हमारा दायरा केवल पति, पत्नी और बच्चों तक ही है। हमारी इसी सोच पर चोट करता है यह उद्घोष, 'भारत किसका, हमारा।' यह चोट कारगर बने, हम इसे अपना मानना प्रारम्भ करें। यदि हम इसे अपना मानना प्रारम्भ कर देंगे तो फिर यह शिकायत नहीं करेंगे कि अब जमाना बदल गया है। हथियार बदल गए हैं। सत्ता बदल गई है। शासक बदल गए हैं। क्योंकि जो हमारा होता है वह हर काल में हमारा ही होता है। वह हर सत्ता और शासन में हमारा ही होता है क्योंकि हमारेपन के रागात्मक संबंध का अहसास हमारे में स्वयं में होता है। उसका आधार हमारा स्वयं का हृदय होता है और यदि हृदय में वह रागात्मकता जीवित है तो फिर ये सभी प्रश्न शांत हो जाते हैं कि साधन बदल गए हैं, सत्ता बदल गई है, व्यवस्था बदल गई है या शासक बदल गए हैं। जिनके हृदय में वह रागात्मकता जीवित रहती है वे बदले हुए साधनों का अपने अनुसार उपयोग कर लेते हैं। वे हर व्यवस्था में अपना ध्येय साध लिया करते हैं। उनके लिए शासक एवं सत्ता कोई बहुत अधिक महत्व नहीं रखते। यह रागात्मकता दायित्व बोध जागृत करती है। हमारे क्षात्र धर्म को स्मरण कराती है और हम पढ़ते आए हैं, सुनते आए हैं कि क्षात्र धर्म देश, काल और परिस्थिति निरपेक्ष धर्म है। यदि ऐसा है तो फिर कोई भी सापेक्षता इसके आड़े कैसे आ सकती है। इसलिए आएं! हम सब मिलकर इस उद्घोष को चरितार्थ करें कि यह भारत हमारा है, हमारा था और हमेशा हमारा रहेगा। हमारे जीवन निर्वाह के लिए हो सकता है कि 20 गुणा 50 का आवासीय भूखंड पर्याप्त हो, या 10-15 बीघा कृषि जोत पर्याप्त हो लेकिन दायित्व बोध के लिए इस प्रकार की सीमाएं आड़े नहीं आती। जहां कुछ प्राप्त नहीं करना हो बल्कि देना हो वहां कैसी सीमाएं और हमारे पूर्वजों ने इस भारत को अपना मानकर कुछ लिया नहीं बल्कि दिया ही दिया है। इसीलिए आएं! पूज्य तनसिंह जी के इस उद्घोष को चरितार्थ करें कि यह भारत हमारा है।

खरी-खरी

विमर्श विरोधी प्रगतिवादी

हाल ही में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख माननीय मोहन जी भागवत ने इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय में एक कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि आरक्षण के समर्थकों एवं विरोधियों दोनों को एक दूसरे के हित का ध्यान रखते हुए बात करनी चाहिए। दोनों के बीच सामंजस्य होना चाहिए। उनके इस बयान से देश की फिजां में आरोप प्रत्यारोप का दौर प्रारम्भ हो गया। ऐसा ही बिहार विधानसभा चुनावों से पहले भी श्री भागवत ने एक ऐसे ही बयान को लेकर हल्ला मचाया गया था जब उन्होंने आरक्षण व्यवस्था की समीक्षा को लेकर अपनी बात कही थी। अपने आपको प्रगतिवादी कहने वाले लोग इसे आरक्षण विरोधी बयान बताकर एक वर्ग विशेष के वोटों के मालिक बनने को तत्पर बन रहे हैं तो दूसरी तरफ दूसरा पक्ष उन वोटों के अपने विरुद्ध ध्रुवीकरण के डर से रक्षात्मक हो रहा है। आरक्षण होना चाहिए या नहीं होना चाहिए इस विषय पर लंबी बहस हो सकती है। अनेक लोग इसके पक्ष या विपक्ष में अनेक तर्क दे सकते हैं। इसको लाभ या हानि गिना सकते हैं। निश्चित रूप से जन्म के आधार पर व्यक्ति की गरिमा को ठेस पहुंचाने की रूढि भारत की उज्ज्वल संस्कृति पर धब्बा थी और आज भी कतिपय लोग इस रूढ़ि से चिपके हुए हैं लेकिन कोई भी विषय विमर्श से परे कैसे हो सकता है? अपने आपको प्रगतिवादी करने वाले तथाकथित लोग प्रायः इस बात को लेकर आंदोलित होते रहते हैं। अभी धारा 370 को लेकर केन्द्र सरकार के फैसले पर भी उन लोगों का आरोप है कि इस विषय पर पर्याप्त विमर्श होना चाहिए। निश्चित रूप से उनकी यह मांग जायज है कि विमर्श के अभाव में कोई निर्णय एक तरफा हो जाता है इसलिए विमर्श होना चाहिए। लेकिन आश्चर्य तब पैदा होता है जब ये ही लोग विमर्श के विरोधी बन जाते हैं। वर्तमान में चल रही किसी व्यवस्था पर विमर्श की बात पर ही भड़क उठते हैं। तब यूं लगता है कि अपने आपको प्रगतिवादी कहने वाले ये लोग विमर्श के हिमायती नहीं है बल्कि स्वयं की सुविधा के अनुसार होने वाले विमर्श के हिमायती हैं। इनके अनुसार वे ही विषय विमर्श के लायक हैं जिनसे इनके हित सधते हैं। इनके हितों के खिलाफ यदि किसी भी प्रकार के विमर्श की बात की जाती है तो इनकी आंखे चौकन्नी हो जाती हैं और ये ऐसे विमर्श को कभी दलित विरोधी, कभी सांप्रदायिक, कभी संविधान विरोधी तो कभी राष्ट्र विरोधी घोषित करने को उद्यत हो जाते हैं। राष्ट्र में ऐसा वातावरण बनाने के प्रयास में जुट जाते हैं जैसे प्रलय होने वाला है। इनके अनुसार भारतीय इतिहास के किसी सत्य को इसलिए प्रकट नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि वह आज तक इन्होंने अप्रकट रखा है। इनके अनुसार भारतीय मानदंडों को लेकर किसी प्रकार का अधिकारिक विमर्श नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि अभी तक ऐसा नहीं किया गया है। इनके अनुसार 70 वर्षों से चली आ रही वही व्यवस्था श्रेष्ठ है जिसमें उनके हित सधते रहे हैं। ऐसे में यह लगता है कि ना ही तो ये लोग प्रगतिवादी है और ना ही विमर्शवादी। यदि ये प्रगतिवादी होते तो किसी भी विषय पर विमर्श से इन्हें भयभीत होने की क्या आवश्यकता है? उदाहरणार्थ हम आरक्षण को ही लेवें। आज सभी वर्गों को न्यूनाधिक रूप से आरक्षण मिल गया है और वह 50 प्रतिशत की सीमा को भी पार कर चुका है। हालांकि कई स्वार्थी राजनेता इस 50 प्रतिशत के बंधन की समाप्ति का भी दुरुपयोग प्रारम्भ कर चुके हैं लेकिन फिर भी आज लगभग सब वर्गों को आरक्षण है। ऐसे में यदि राष्ट्र इस विषय पर खुले दिल से विमर्श करता है कि अब तक इस व्यवस्था से कितने लोगों को लाभ हुआ, कौन-कौन जरूरतमंद इससे लाभान्वित हुआ या कौन नहीं हो पाया? यदि सब जरूरतमंद इसमें लाभान्वित नहीं हो पाए तो इसका क्या कारण है? उन कारणों को कैसे दूर किया जाए? जिस अंतिम पायदान के व्यक्ति तक यह पहुंचना चाहिए था उस तक पहुंचने में कौन अवरोध बने हैं एवं उन्हें कैसे हटाया जाए? जिन लोगों को यह अब तक मिला था क्या उनको इसका पूरा लाभ मिल पाया है? क्या इसके किन्हीं प्रावधानों को बदला जाना आवश्यक है? **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	**सोढ़ांकोर** (जैसलमेर)।
2.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	**बरांगणा** तहसील डीडवाना (नागौर)।
3.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	**बड़ी रूपाहेली** (भीलवाड़ा)। भीलवाड़ा से अजमेर रोड पर बड़ी रूपाहेली चौराहे पर उतरें।
4.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	मोडिया महादेव, **विजयपुर** (चित्तौड़गढ़)।
5.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	आलोक आश्रम, **बीजीए** (बाड़मेर)।
6.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	मामाजी का थान, **हरियाली** (जालोर)। सांचौर हरियाली मार्ग पर स्थित।
7.	तीन दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 09.09.2019 तक	हरभमजी राजपूत बोर्डिंग हाऊस **राजकोट** (गुजरात)।
8.	तीन दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 09.09.2019 तक	राजपूत बोर्डिंग हाऊस। **धंधुका** (गुजरात)।
9.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	धुम्बड़ा माताजी मंदिर, **भाद्राजून** (जालोर)। रामा-कोराणा मार्ग पर भाद्राजून व रामा से टैक्सी उपलब्ध।
10.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	**आऊ (जोधपुर)**। फलौदी-नागौर मार्ग पर।
11.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	**बेलासर (बीकानेर)**। नापासर-गुसांईसर मार्ग पर रूपनाथ महाराज का मंदिर, बीकानेर से 11 बजे बस है।
12.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	मोडिया महादेव मंदिर। **विजयपुर** (चित्तौड़गढ़)। **सम्पर्क सूत्र :** दिग्विजयसिंह 9460225445
13.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	07.09.2019 से 10.09.2019 तक	नवलखा फार्म हाउस, **डूंगपुर**। **सम्पर्क सूत्र :** 9923302342
14.	तीन दिवसीय प्र.शि. (बालक)	14.09.2019 से 16.09.2019 तक	एम.बी. हाई स्कूल, **डाभला**। जिला मेहसाणा (गुजरात)
15.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**देचू** (जोधपुर)।
16.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**राजगढ़** (जैसलमेर)। पोकरण से राजगढ़ के लिए बसें उपलब्ध।
17.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**केतू कला**। जोधपुर-जैसलमेर मार्ग पर 34 मील उतरें। **सम्पर्क सूत्र :** नाथूसिंह - 9950473366
18.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**गिड़ा** (बाड़मेर)। बालोतरा, बायतु व पाटोड़ी से बस उपलब्ध।
19.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.09.2019 से 22.09.2019 तक	**ईसरू** (ओसियां)। जिला जोधपुर।
20.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	20.09.2019 से 23.09.2019 तक	मुडेश्वर महादेव मंदिर **बिशनगढ़** (जालोर)।
21.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	20.09.2019 से 23.09.2019 तक	बिरलेश्वर महादेव मंदिर **बिरोलिया** (पाली)। सुमेरपुर से बस व टैक्सी उपलब्ध।
22.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	**डोरडा** (जालोर)।
22.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	ढेलाना (जोधपुर)। **सम्पर्क सूत्र :** हरिसिंह ढेलाना - 9783622100

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

खरी... (पृष्ठ चार का शेष)

क्या किन्हीं नए प्रावधानों को इसमें जोड़ा जाना चाहिए आदि अनेक प्रश्न हो सकते हैं जिन पर विमर्श किया जाना चाहिए। कोई आवश्यक तो नहीं कि इस विमर्श का परिणाम विपरीत ही आए लेकिन विमर्श ही न होना या विमर्श के आह्वान पर ही हाय तौबा मचा देना क्या प्रगतिवाद है? प्रगतिवाद का तो अर्थ ही निरन्तर अद्यतन होता है। प्रगतिवादी होने का अर्थ तो मन मस्तिष्क का खुला होना होता है। सदैव अनावश्यक को छोड़ने एवं आवश्यक को ग्रहण करना होता है और ऐसा प्रगतिवादी ही वास्तव में प्रगतिवादी होना होता है। भारत तो सदा से प्रगतिवादी रहा है। भारत में तो निरन्तर अद्यतन की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। व्यवस्था की विकृतियों को छोड़ने एवं नई अच्छी बातों को ग्रहण करने के लिए भारत तो सदैव तत्पर रहता आया है लेकिन वर्तमान के तथाकथित प्रगतिवादी वास्तव में प्रगतिवादी नहीं बल्कि यथास्थितिवादी होती है। उनके अनुसार जो चल रहा है वह सही है क्योंकि इसमें ही उनके हित सध रहे हैं। वास्तव में उनका लक्ष्य स्वयं का हित होता है और ऐसे ही स्वयं के हित की हानि की कल्पना मात्र वाले वास्तव में डरपोक लोग हैं जो हर उस बदलाव की संभावना को भी नकारते हैं जिनमें उनकी स्थिति कमजोर होने की संभावना उन्हें लगती है। ऐसे लोग प्रगतिवादी होने का ढोंग करते हैं लेकिन वास्तव में वे निपट स्वार्थी लोग होते हैं। इसलिए हमें इन छदम् प्रगतिवादी लोगों के झांसे में आने की अपेक्षा सदैव मन मस्तिष्क को खुला रखते हुए वास्तविक प्रगतिवादी बनना है।

तनाश्रम में कृष्ण जन्मोत्सव

जन्माष्टमी के अवसर पर जैसलमेर स्थित संघ कार्यालय तनाश्रम में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया। बाल शाखा ध्रुव के स्वयंसेवकों की मटकी फोड़ एवं रस्सा-कस्सी प्रतियोगित रखी गई। कार्यालय को गुब्बारों एवं केशरिया पताकाओं से सजाया गया। बच्चों द्वारा कृष्ण भजनों पर नृत्य किया गया। कॉलोनी की महिलाएं भी कार्यक्रम में शामिल हुईं।

'जिसकी कोई चाह नहीं, वह ही शहंशाह'

(पृष्ठ एक से लगातार)

संयमी, संकल्पित और दृढ़ प्रतिज्ञित लोग संसार का त्राण करते हैं और हमें वैसा बनना पड़ेगा। जालोर जिले के भीनमाल उपखण्ड मुख्यालय पर वीर शिरोमणी दुर्गादास की जयंती के उपलक्ष में 18 अगस्त को आयोजित स्मृति समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। भीनमाल शहर एवं आसपास के गांवों के सभी जाति वर्ग के लोगों की उपस्थिति में आयोजित इस गरिमा मय समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम दुर्गादास जी को हमारे अंदर उतरने का अवसर दे, अपने हृदय के कपाट खुले रखें। दुर्गादास जी ने कभी सम्मान पाने की चाह नहीं रखी इसीलिए वे आज हम सबका सम्मान पा रहे हैं और आज स्थिति यह है कि स्वयं सम्मानित होने के लिए प्रार्थना पत्र लगाए जाते हैं, यह हमारा पराभाव है। इतिहास हमारे में जागरण का शंख फूंक रहा है लेकिन जागृत तो हमें स्वयं ही होना पड़ेगा। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ नष्ट होते बीज को बचाने का कार्य है ताकि हम उस बीज को आने वाली संतानों को सौंप सकें। आज हम हमारे बच्चों को योग्य बनाने को लेकर चिंतित है लेकिन यह नहीं जानते कि योग्यता क्या होती है? हमने पेट के लिए संघर्ष को ही योग्यता मान लिया है, सभी कैरियर बनाने को चिंतित है लेकिन दुर्गादास जी का संघर्ष पेट के लिए संघर्ष नहीं था। संघ अपने संपर्क में आने वालों को संयम का पाठ पढ़ाता है। संघ इस प्रकार की भावना जागृत करता है कि मैं बार-बार जन्मुं तो इसी राष्ट्र में जन्मुं, इसी कौम में जन्मुं ताकि शेष रहे काम को पूरा कर सकूं। लेकिन यह दुरुह काम है। सारा संसार अपने आपका गुलाम हो गया है। इसीलिए पहली आवश्यकता है कि हम अपने आप को अपने आप से स्वतंत्र करें। अपनी आत्मा को हमारी विकृत बुद्धि, मन व इंद्रियों से स्वतंत्र करें तब ही वास्तविक स्वतंत्र विकसित हो पाएगा। हमारी आत्मा इन सबकी परतंत्रता में क्रंदन कर रही है और जो इस क्रंदन को नहीं सुनता वह संसार का क्रंदन क्या सुनेगा? वह क्षत्रिय नहीं है बल्कि खोखा (आवरण) मात्र है क्योंकि दायित्व निभाए बिना केवल आवरण पर इतरा रहा है। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि पूर्वजों के मार्ग पर आने के लिए वर्तमान मार्ग छोड़ना पड़ता है और यही कष्टदायी है। सब भगवान का दिया हुआ है, वह कभी भी वापिस ले सकता है, इस सूत्र को भूलना ही दुःख का कारण है। मैं आप सभी के सुखी होने की कामना करता हूं और इसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे आपकी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रवृत करें।

चौहटन के श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाऊस में 14 अगस्त को आयोजित जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा की जयंती उनकी मनाई जाती है जो समाज और देश के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं। कृतज्ञता क्या होती है और उसका ज्ञापन कैसे किया जाता है इसका उदाहरण दुर्गादास जी से बड़ा कोई नहीं हो सकता। वे ऐसे वीर थे जिन्होंने अपनी स्वामिभक्ति के लिए अपना संपूर्ण जीवन खपा दिया। उनके जीवन मे अनेको कठिनाइयां आई लेकिन वे निरन्तर संघर्ष करते रहे और अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त की। हमें उनके जीवन का अनुकरण करना चाहिए। उन्होंने हनुमान बनकर अजीत सिंह की रक्षा की। हमें भी हनुमान बनकर देश और समाज की सेवा और रक्षा करनी चाहिए। गीता ही हमारा मार्गदर्शन कर सकती है और हमें गीता में बताए मार्ग पर चलना होगा। जीवन मे संस्कारों का अति महत्व है उन्हें हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। कर्मफल की आशा न करते हुए सद्कर्म करते हैं तो मोक्ष के मार्ग की तरफ हमारा जीवन बढ़ेगा। जो अनुचर बन सकता है वह श्रेष्ठ बन सकता है। जो देश संसार को मार्ग दिखाता था उस भारत के निवासी विदेशी संस्कृति को ग्रहण न करें।

जोधपुर शहर प्रांत द्वारा मनाए गए जयंती सप्ताह के तहत 19 अगस्त को शिक्षक कॉलोनी के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि दुर्गादास जी की जयंती के अवसर पर कार्यक्रम कर उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना उनके ऋण से उऋण होने का सबसे छोटा प्रयास है। इससे आगे बढ़ने के लिए हमें उनके जीवन को स्वयं में उतारना होगा और संघ वहीं मार्ग है। उन्होंने कहा कि राजपूत जाति हमारी मां है, उसके लाखों करोड़ों संतान होते हुए भी वह अपने आपको निपुति अनुभव करती है। पूज्य तनसिंह जी की यही पीड़ा थी और उसी पीड़ा का प्रकट स्वरूप है श्री क्षत्रिय युवक संघ। दुर्गादास जी का जीवन इसी प्रकार की पीड़ा का पर्याय है इसीलिए वे संघ के लिए आदर्श चरित्र रहे हैं और संघ प्रारंभ से ही उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए जयंती मनाता रहा है। उन्होंने कहा कि जो जीने के लिए जीते है वे मर जाते हैं और जो जीवन की परवाह नहीं करते वे अमर हो जाते हैं। 1000 वर्ष पूर्व आई आंधियों से हमारा पराभाव हुआ और इन 1000 वर्ष की गुलामी ने हमारा स्वभाव बदल दिया लेकिन हमारे क्षत्रियत्व का प्राण अभी तक समाप्त नहीं हुआ है, बीज अभी तक समाप्त नहीं है। संघ उसी बीज के रक्षण का कार्य है। हम उस बीज को अगली पीढ़ी को सौंपे ताकि भविष्य उज्ज्वल बन सके। कुछ भी छोड़ना नहीं है बल्कि यह मेरा है यह मानना ही छोड़ना है। यदि हम ऐसा कर पाए तो महापुरुषत्व आएगा। दुर्गादास जी हमारे अंदर उतरने लगेंगे। संघ इसी अवतरण का मार्ग है।

20 अगस्त को जोधपुर के बासनी क्षेत्र की जय भवानी नगर कॉलोनी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि दुर्गादास जी का पूरा जीवन एक ऋण से उऋण होने का जीवन है। जसवंतसिंह जी द्वारा दिए गए सम्मान का ऋण उन्होंने स्वीकार किया और जीवन भर उस ऋण से उऋण होने को संघर्षरत रहे। वह मां धन्य है जिसकी कोख से दुर्गादास जैसे शूरवीर पैदा होते हैं। आज भी दुर्गादास जी जैसे महापुरुष जन्म लेना चाहते हैं लेकिन उपयुक्त बीज एवं कोख का अभाव है। बच्चे तो निरन्तर जन्म रहे हैं लेकिन क्षत्रिय नहीं जन्म रहे। संघ उस बीज और कोख को इसके उपयुक्त बनाने को प्रयासरत है जिसमें दुर्गादास जैसी आत्माएं अवतरित हो सकें। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि रामायण काल कर्तव्य के लिए संघर्ष का काल था लेकिन कालांतर में महाभारत काल आते-आते कर्तव्य का स्थान अधिकार ने ले लिया। उसके बाद के युद्धों का कारण अहंकार रहा, हम छोटे-छोटे राज्यों की सीमाओं में आबद्ध हो अपने अहंकार की तुष्टि के लिए लड़ते रहे और परिणाम स्वरूप पूरा राष्ट्र गुलाम हो गया। उस काल में दुर्गादास जैसा निरंहकारी, निस्वार्थ महापुरुष हमें अपनी ओर आकर्षित करता है और यही आकर्षण दुर्गादास जी को श्री क्षत्रिय युवक संघ का आदर्श चरित्र बनाता है। हमें यथायोग्य प्रयास कर दुर्गादास बनने के मार्ग पर बढ़ना चाहिए ओर इसके लिए संघ सदैव सहायता के लिए तत्पर है।

दुर्गादासजी... तत्पश्चात क्रमशः 14 अगस्त को बी.जे.एस. कॉलोनी, 15 अगस्त को वीर शिरोमणि दुर्गादास राठौड़ स्मारक, 16 अगस्त को डिगाड़ी, 17 अगस्त को जसवन्त छात्रावास पुराना परिसर, 18 अगस्त को तीन नंबर छात्रावास, 19 अगस्त को शाखा मैदान, शिक्षक कॉलोनी, चौपासनी तथा 20 अगस्त को जय भवानी नगर, बासनी में दुर्गादास जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुए। 19 अगस्त को शिक्षक कोलोनी, चौपासनी में तथा 20 अगस्त को जय भवानी नगर, बासनी के कार्यक्रम माननीय संघ प्रमुख श्री के पावन सान्निध्य में आयोजित हुए। जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति भवन में 15 अगस्त को वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी के सान्निध्य में दुर्गादास जी की जयन्ती मनाई गई। साथ ही रक्षाबंधन व स्वतंत्रता दिवस भी मनाया गया। स्वयंसेवको ने तिरंगा फहराकर तथा एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। इसी प्रकार नागौर संभाग के कुचामन प्रान्त में दुर्गादास जी की जयन्ती पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मकराना शहर स्थित सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजपूत सभा भवन में 13 अगस्त को आयोजित कार्यक्रम में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक छोटूसिंह जाखली उपस्थित रहे। जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रान्त के अंतर्गत बेलवा राजगढ़ की पद्मावत और महाराणा प्रताप शाखा ने सामूहिक रूप से 17 अगस्त को वीर शिरोमणि दुर्गादास जी की जयंती मनाई। उज्जैन में भी दुर्गादास जी की जयन्ती मनाई गई जिसमें संघ के स्वयंसेवक कमलसिंह बेमला उपस्थित थे। इसी प्रकार मुम्बई प्रान्त की सभी शाखाओं में भी दुर्गादास जी की जयन्ती मनाई गई जिनमें तनेराज शाखा मुम्बई, नारायण शाखा भायन्दर, दुर्गादास शाखा मालाड, कल्ला रायमलोत शाखा कल्याण, नृपाल देव शाखा बोरीवली व कान्जुर मार्ग शाखा सम्मिलित है। इस दौरान शाखाओं के स्वयंसेवकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में समाजबंधु भी उपस्थित रहे। सभी ने दुर्गादास राठौड़ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्मरण करके उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। बाड़मेर में स्टेशन रोड स्थित मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास में वरिष्ठ स्वयंसेवक तथा शिक्षाविद कमलसिंह चूली की उपस्थिति में जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ जिसमें छात्रावास के विद्यार्थियों के अतिरिक्त शहर में रहने वाले सैकड़ों समाजबंधु सम्मिलित हुए तथा दुर्गादास जी को नमन किया। चित्तौड़गढ़ स्थित श्री क्षत्रिय सेवा संस्थान भवन, सेंती में 14 अगस्त को दुर्गादास जी की जयन्ती वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह साजियाली की उपस्थिति में मनाई गई। कार्यक्रम को इतिहासज्ञ व शिक्षाविद लोकेन्द्र सिंह ज्ञानगढ़ ने भी संबोधित किया। सूरत में सारोली स्थित वीर अभिमन्यु पार्क में संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ की उपस्थिति में दुर्गादास जी की जयन्ती मनाई गई। इस दौरान प्रांतप्रमुख खेतसिंह चांदेसरा भी उपस्थित रहे। सुजानगढ़ में राव बीदा जी संस्थान में भी वीरवर दुर्गादास राठौड़ की जयंती मनाई गई। बीकानेर में 13 अगस्त को कार्यक्रम रखा गया। जयपुर में प्रतिवर्ष की भांति दुर्गादास राठौड़ स्मृति समिति द्वारा फतेह निवास में कार्यक्रम रखा गया। राजपूत सभा जयपुर द्वारा भी जयंती मनाई गई। वीरवर दुर्गादास स्मृति संस्थान मेवाड़ द्वारा 13 अगस्त को उदयपुर में स्नेहमिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित कर जयंती मनाई गई। इस अवसर पर 90 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

विश्वराजसिंह : विश्वराजसिंह पुत्र महावीरसिंह धमोरा ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित माध्यमिक परीक्षा में 94.50 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। प्रत्येक विषय में 90 से अधिक अंक प्राप्त किए हैं।

दीपिका कंवर : दीपिका कंवर पुत्री योगेन्द्रसिंह धमोरा ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 86.67 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। प्रत्येक विषय में 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त किए हैं।

शिवानी शेखावत : शिवानी शेखावत पुत्री कायमसिंह धमोरा ने माध्यमिक परीक्षा में 80.67 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की।

माउंट एल्बर्स पर फहराया तिरंगा

चित्तौड़गढ़ जिले के सतपुड़ा पंचायत के चौहानों के कंचारिया गांव निवासी एवं सहाड़ा थानाधिकारी रतनसिंह चौहान ने यूरोप में 18510 फीट ऊंची पर्वत चोटी माउंट एल्बर्स पर तिरंगा झंडा फहरा कर पर्वतारोहण के क्षेत्र में नाम कमाया है।

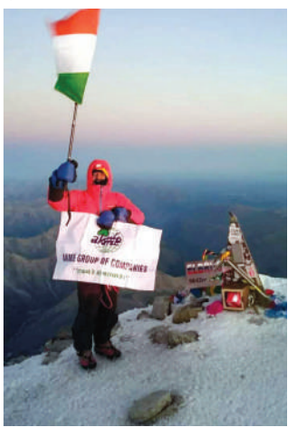

(पृष्ठ दो का शेष) बाड़मेर संभाग के गुड़ामालानी प्रान्त के राणासर कला गांव में भी एक शिविर **भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम** के तत्वाधान में सम्पन्न हुआ। 23 से 26 अगस्त तक आयोजित इस शिविर का संचालन गणपतसिंह बूठ ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से समाज को मातृ स्वरूपा मानकर उसकी सेवा की बात कही। शिविर में राणासर, बूल, खारी, गंगासरा, फागलिया, बूठ, बागोझ आदि गांवों के लगभग 80 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। रणछोड़ सिंह राणासर कला ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। मेवाड़-वागड़ सम्भाग में उदयपुर शहर स्थित मीरा मेदपाट भवन में बालिकाओं के चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 22 से 25 अगस्त तक हुआ जिसका संचालन लक्ष्मी कंवर खारड़ा ने किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि हम पर ही संस्कार निर्माण का सर्वाधिक दायित्व है क्योंकि माता ही किसी बालक की सर्वप्रथम शिक्षक होती है इसीलिए हमारा स्वयं का संस्कारित होना पहली आवश्यकता है। इसके लिए बार-बार शिविरों में आना होगा। शिविर में उदयपुर शहर, नाथद्वारा, कुराबड़, चित्तौड़गढ़ तथा भीलवाड़ा से 95 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान बालिकाओं ने जन्माष्टमी का पर्व भी मनाया। चित्तौड़गढ़ स्थित जौहर भवन में दो दिवसीय बाल शिविर का भी आयोजन हुआ जिसमें 65 बच्चों ने संघ का प्राथमिक परिचय प्राप्त किया। 24 से 25 अगस्त को आयोजित इस शिविर का संचालन मीना कंवर सहाड़ा तथा डिंपल कंवर बरडोद ने किया।

(पृष्ठ एक का शेष) 75 स्थानों... इसके बाद अगले दो दिनों में भीनमाल, पूंगल, चितलवाना, बायतु, नावां, बागोड़ा, डेगाना, नागौर, खाजुआला, सुमेरपुर, सेड़वा, रिंया, धोरीमन्ना, रामगढ़, अजमेर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जहाजपुर, गुलाबपुरा कोटड़ी, रायपुर, हमीरगढ़, बांसवाड़ा, श्रीमाधोपुर आदि स्थानों पर ज्ञापन दिए गए। इस प्रकार कुल मिलाकर 75 स्थानों पर ज्ञापन दिए गए।

सास के सहयोग से बहु बनी सी.ए.

रामसिंह सिरसूं की पुत्रवधु पंकज कंवर विगत दिनों सी.ए. के अंतिम परिणाम में सफल हुई है। भूपेन्द्रसिंह सिरसुं की पत्नी एवं शैतानसिंह नाणाबेड़ा की पुत्री पंकज कंवर अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी सास इन्द्रकंवर को देती है जिन्होंने एक पुत्री की भांति उन्हें पढ़ने का अवसर ही नहीं दिया बल्कि घर के सम्पूर्ण काम के साथ-साथ अपने पोते के लालन-पालन की जिम्मेदारी संभाल कर बहु को केवल पढ़ाई करने के लिए पूरा समय दिया।

इसी प्रकार लोरोली गांव निवासी विजयसिंह पुत्र शंकरसिंह भी सीए के अंतिम परिणाम में उत्तीर्ण होकर सीए बने हैं।

पूजा कंवर बनी अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी

सीकर जिले के सांवलोदा लाडखानी निवासी पूजा कंवर आठवीं एशियन महिला यूथ हैडबॉल चैंपियनशिप में भारतीय टीम का हिस्सा बनकर अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बन गई हैं। वह चार बार जिला स्तर पर, चार बार राज्य स्तर पर एवं दो बार राष्ट्रीय स्तर पर खेल चुकी है।

खींवसिंह भाटी को राष्ट्रपति पुरस्कार

बीकानेर के गिराजसर निवासी एवं वर्तमान में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बाड़मेर के पद पर कार्यरत खींवसिंह भाटी को दूसरी बार राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजा गया है। आपने आतंकवादियों से शौर्यपूर्वक संघर्ष करते हुए उन्हें यमलोक पहुंचाया है एवं 19 खूंखार आतंकवादियों को जिंदा गिरफ्तार किया है। खालिस्तान टाईगर फोर्स के कमांडर रेशमसिंह ममरोली को उसकी एके-47 के साथ आपने गिरफ्तार किया था। आपने 5 पाकिस्तानी जासूसों को भी बड़ी मात्रा में हेरोइन की खेप सहित पकड़ा था।

समुद्रगुप्त

चन्द्रगुप्त ने अपने जीवनकाल में ही अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। यद्यपि वह ज्येष्ठ पुत्र नहीं था। उसकी माता लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी थी। कुछ साहित्यक कृतियों के अनुसार उसका एक अन्य नाम 'कच' भी था। समुद्रगुप्त के बारे में जानकारी का प्रमुख स्रोत उसका अभिलेख 'प्रयाग प्रशस्ति' और एरण अभिलेख है, इसके अतिरिक्त समुद्रगुप्त की विविध प्रकार की स्वर्ण मुद्राएं भी उसके बारे में विभिन्न प्रकार की जानकारियां देती हैं। समुद्रगुप्त जिस समय शासक बना, तब गुप्त साम्राज्य अपने प्रारंभिक काल से स्थायित्व की ओर बढ़ रहा था। समुद्रगुप्त एक दूरदर्शी शासक था जो जानता था कि विभिन्न राज्यों और शासन पद्धतियों में विभाजित भारत वर्ष मध्य एशिया से लगातार आ रही आक्रमणकारी जातियों का सामना नहीं कर पाएगा। देश के उत्तर पश्चिम भाग में कुछ विदेशी जातियों ने अपने राज्य स्थापित कर लिए थे। भारत वर्ष को एक राजनीतिक सूत्र में बांधने, एक जैसी शासन व्यवस्था स्थापित कर देश की सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए समुद्रगुप्त को सौ युद्धों का विजेता कहा गया है। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार सम्पूर्ण भारत वर्ष को जीत कर एक करना ही दिग्विजय की नीति का उद्देश्य था। सर्वप्रथम समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत के कुछ शासकों को पराजित किया जिनमें अहिच्छत्र का नागवंशी शासक अच्युत, ग्वालियर के नजदीक पद्मावती का नागसेन और पूर्वी पंजाब का कीत वंशीय शासक प्रमुख थे इन तीनों शासकों की संयुक्त सेना को समुद्रगुप्त ने कौशाम्बी में परास्त किया। आर्यावर्त के इस छोटे से अभियान के बाद समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान किया, प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त के इस दक्षिण अभियान में समुद्रगुप्त से पराजित बारह राज्यों और उनके शासकों के नाम मिलते है जिनमें प्रमुख थे, कौशल का राजा महेन्द्र, महाकान्तार का व्याघ्रराज, कांची का विष्णुगोप, मैत्री का हस्तिवर्मा, अवमुक्त का नीलराज, कुस्थलपुर का धनंजय आदि। समुद्रगुप्त ने तात्कालीन दक्षिण भारत की प्रमुख शक्ति काकाटकों के एक सेनानायक व्याघ्रदेव को परास्त कर वाकटकों को सुदूर दक्षिण तक सीमित कर दिया। कुछ साहित्यकारों व इतिहासकारों ने समुद्रगुप्त की दक्षिण विजय की तुलना रघुवंश में वर्णित रघु की धर्म विजय से की है।

समुद्रगुप्त के दक्षिण अभियान के दौरान उसकी अनुपस्थित का लाभ उठाकर उत्तर भारत व पूर्वी भारत के कुछ शासकों ने पुनः स्वतंत्र होने का प्रयास किया। अतः दक्षिण की विजय के बाद वापिस लौटकर समुद्रगुप्त ने ऐसे शासकों को पूर्णतया पराजित कर उनके राज्यों का गुप्त साम्राज्य में विलय कर दिया। इन शासकों में कौशाम्बी का रूद्रदेव, पश्चिम बंगाल का चन्द्रवर्मा, मथुरा का गणपति नाग आदि प्रमुख थे। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार इसके बाद समुद्र गुप्त ने विन्ध्यांचल के उत्तर के सभी आटविक राजाओं (वर्तमान मध्यप्रदेश के जबलपुर से उत्तरप्रदेश के गाजीपुर) को परास्त कर पूर्णतया अपने नियंत्रण में कर लिया। समुद्रगुप्त ने पंजाब, राजस्थान और मालवा के गणराज्यों को भी परास्त कर उन्हें गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। इन गणराज्यों में मालव, अर्जुनायन, यौधेय, आभीर और सनकानीक शामिल थे। **(क्रमशः)**

भैरूसिंह चाबा को पितृशोक

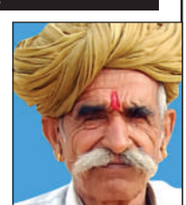

जोधपुर के शेरगढ़ क्षेत्र के स्वयंसेवक भैरूसिंह चाबा के पिताजी **श्री दीपसिंह चाम्बड़ा** का 77 वर्ष की उम्र में 7 अगस्त को देहावसान हो गया। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों स्थान देवें एवं परिजनों को इस दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

दीपसिंह चाम्बड़ा

दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह को मातृशोक

संघ के स्वयंसेवक दलपतसिंह गुड़ा केशरसिंह की माताजी **श्रीमती सुगनकंवर** पत्नी मोहनसिंह का देहावसान 11 अगस्त हो गया। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्रीमती सुगनकंवर

रिछपालसिंह बामण्या का देहावसान

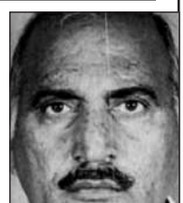

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **रिछपालसिंह बामण्या** का 24 अगस्त को देहावसान हो गया। वे 15 से 20 अक्टूबर 1988 को तोलियासर में आयोजित शिविर में संघ के सम्पर्क में आए। दिसम्बर 1988 में पुष्कर में आयोजित शिविर से नियमित सक्रिय हुए। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिजनों को इस दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

रिछपालसिंह बामण्या

भूचरमोरी शहीद को श्रद्धांजलि में तलवार रास

जुलाई 1591 में शरणागत रक्षा हेतु अकबर की सेना से जामनगर के क्षत्रिय शासकों द्वारा लड़े गए भूचरमोरी युद्ध की स्मृति में गुजरात राजपूत युवा संघ द्वारा आयोजित 28वें भूचरमोरी शहीद श्रद्धांजलि समारोह में 23 अगस्त को दो हजार से अधिक युवतियों ने तलवार रास पेश कर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस समारोह में केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं सेवानिवृत जनरल वी.के. सिंह, उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व सांसद जगदंबिका पाल, गुजरात के राज्यमंत्री धर्मेन्द्रसिंह जाड़ेजा अतिथि के रूप में शामिल हुए।

जैसलमेर, नोखा, श्रीडूंगरगढ़, देऊ फांटा व मेड़ता में बैठक सम्पन्न

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की तहसील स्तरीय बैठकों के क्रम में 24 अगस्त को बीकानेर जिले की नोखा तहसील की बैठक राजपूत छात्रावास नोखा में सम्पन्न हुई। इसी दिन शाम 4 बजे श्री डूंगरगढ़ स्थित राजपूत छात्रावास के भवन में श्री डूंगरगढ़ तहसील की बैठक सम्पन्न हुई। 25 अगस्त को नागौर की खींवसर तहसील की बैठक नागौर-फलोदी रोड स्थित देऊ फांटा पर औंकारसिंह देऊ के कॉलेज में सम्पन्न हुई। 25 अगस्त को ही मेड़ता तहसील की बैठक मेड़ता शहर में स्थित श्री चारभुजा राजपूत छात्रावास में आयोजित हुई। चारों ही स्थानों पर संबंधित तहसील के समाज बंधुओं के साथ श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की स्थापना की पृष्ठभूमि, संघ से संबद्धता, उद्देश्यों एवं अब तक हुए कार्य की विस्तार से चर्चा की गई। आर्थिक आधार पर कमजोर वर्ग को दिए गए आरक्षण को लेकर भी चर्चा की गई। उपस्थित समाज बंधुओं ने फाउंडेशन के संदेश के गांव तक ले जाने के कार्यक्रम तय किए। नोखा एवं श्री डूंगरगढ़ में बीकानेर टीम के सदस्य रामसिंह चरकड़ा ने फाउण्डेशन के उद्देश्यों के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता को लेकर अपनी बात कही। इसी प्रकार देऊ फांटा व मेड़ता शहर में नागौर टीम के सदस्य नारायणसिंह गोटन ने समाज की वर्तमान स्थित और फाउण्डेशन की आवश्यकता विषय पर अपनी बात कही। खींवसर की बैठक में लालसिंह चावंड़िया व ओंकारसिंह देऊ ने भी अपनी बात कही। मेड़ता बैठक में भारतसिंह गगवाणा ने समाज के अधिकारियों की जोधपुर टीम द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए चलाई जा रही टेस्ट सीरिज के बारे में जानकारी दी। 18 अगस्त को जैसलमेर स्थित संघ कार्यालय में जैसलमेर टीम द्वारा जैसलमेर शहर की बैठक रखी गई। बैठक में शहर से आए समाज बंधुओं को एस.के.पी.एफ. के संदेश से रूबरू करवाया।

रणबांकुरों के बलिदान की 340वीं वर्षगांठ मनाई

340 वर्ष पूर्व पुष्कर स्थित भगवान विष्णु के मंदिर को ध्वस्त करने एवं गो रक्त से पुष्कर सरोवर को अपवित्र करने के लिए औरंगजेब द्वारा भेजी गई सेना से मुकाबला कर उनकी योजना को विफल करने वाले रणबांकुरों का 340वां बलिदान दिवस जन्माष्टमी के दिन पुष्कर में मनाया गया। जयमल न्यास द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विधायक सुरेशसिंह रावत अतिथि के रूप में मौजूद रहे। वक्ताओं ने उस युद्ध के इतिहास के बारे में बताया। उनकी स्मृति में बने स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

नीरज कंवर खुहड़ी को एक्सीलेंसी अवार्ड

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जैसलमेर टीम के सहयोगी रणवीरसिंह खुहड़ी की पत्नी नीरज कंवर को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड (लंदन) के तत्वावधान में नेशनल एक्सीलेंसी अवार्ड से इंदोर में सम्मानित किया गया। नीरज कंवर जयपुर में संतुष्टि फाउंडेशन नामक संस्था चलाती हैं जो महिला सशक्तिकरण, बालिका शिक्षा, गरीबों की मदद, पौधरोपण जैसे सामाजिक कार्य करती है।

भाई बहिन ने जीते शूटिंग में तीन गोल्ड

पलसाना निवासी एवं श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के सीकर में सहयोगी राजेन्द्रसिंह के पुत्र एवं पुत्री ने जगतपुरा (जयपुर) में आयोजित राज्य स्तरीय ओपन शूटिंग चैंपियनशिप में तीन गोल्ड के साथ कुल 6 मैडल जीते। पुत्र दीपेन्द्रसिंह ने 50 मीटर प्रोन जुनियर में गोल्ड, सीनियर में कांस्य, 50 मीटर थ्री पोजिशन जुनियर में कांस्य पदक जीता। वहीं पुत्री जया कंवर ने 50 मीटर प्रोन जुनियर में गोल्ड, 50 मीटर प्रोन सीनियर में गोल्ड एवं थ्री पोजीशन जुनियर में सिल्वर मेडल जीता। साथ ही दोनों भाई-बहिन ने तैराकी की राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में कई रिकॉर्ड के साथ पदक जीते हैं।

काणेटी में प्रतिभा सम्मान समारोह

काणेटी (गुजरात) का श्री जय अम्बे स्वयंसेवक संघ विगत 25 वर्षों से स्वतंत्रता दिवस के दिन गांव के प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान कर उन्हें प्रोत्साहित करता है। इस वर्ष भी यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस बार मातृभूमि की रक्षार्थ परिवार से दूर सीमा पर रक्षा करने वाले सैनिकों में से साणंद के हरदीपसिंह दीपू भा गोहिल को भी सम्मानित किया गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org